।। अनूभूतियो,जख्मों,परपीड़ा एवं संवेदनाओं से उपजी पीडाओं की उपज है–कहानी संग्रह मुट्ठी भर आग ।।

साहित्यकार श्री नन्दलाल भारती शोषितों–वंचितों के पक्षधर है, यह सत्यता कहानी संग्रह मुट्टी भर आग में संकलित 25 कहानियों से जांची–परखी जा सकती है । मुट्ठी भर आग की कहानियों की अर्न्तधाराओं में सामाजिक विकृत और शोषण उत्पीड़न पर आधारित आधुनिक रूढीवादी सामाजिक व्यवस्था,नारी–उत्पीड़न एवं राजनीतिक छलावों के विरूध्द राष्ट्रीय एवं मानवीय–एकता हेतु वैचारिक विद्रोह का शंखनाद ही कहानीकार की ख्वाहिश । कहानीकार श्रीनन्दलाल भारती मुंशीजी के पदचिन्हों पर चलते हुए परमार्थ, दहश्त,लहूं के कतरे,दर–ब–दर,चुल्लू भर पानी, फर्ज,दहेज की आग, कसम, पथराव,सौदा,कन्यादान,दण्ड,गुडिया का ब्याह,घरोही,गज भर कफन, मरते सपने,लहू के निशान, दुखिया माई, दंश,चुभती यादें,दास्तान–ए– गांव, पिकनिक,,मुनियां, परायापन, पिसुआ,एक्सीडेण्ट,नेकी समाचर,निरापद, नेकी बना अभिशाप, गाल भर धुआं, चोरनी, बारात, रिश्ता, हरा घाव, बहते आंसू, प्रतिघात, पुराना जख्म, मुलजिम, जलसा,सेर भर कमाई,कलंक, और ख्वाहिश के माध्यम से आम आदमी की पीड़ा को कलमबद्ध कर सामाजिक,राजनैतिक, आर्थिक बुराईयों पर प्रहार करने का प्रयास किया है। कहानीकार श्री नन्दलाल भारती का यह कथा संग्रह मुट्ठी भर आग सहित अन्य रचनायें अर्न्तजाल के पाठकों द्वारा तो पढ़ा जा रही है परन्तु इस कहानी संग्रह सहित श्री भारती के अन्य कहानी संग्रहों,उपन्यासों,लघुकथा संग्रहों एवं काव्य संग्रहों आम पाठकों तक पहुंचना बाकी है। इस अहम् कार्य को प्रकाशक कर तो सकते ह पर योग्य प्रकाशक आगे आये तब ना, प्रेमचन्द के पदचिन्हों पर चल रहे रचनाकार श्री नन्दलाल भारती की रचनायें आम पाठकों तक पहुंच सकेगी ।

.....

स्थान–इंदौर
दिनांक 05.022011